विनोबा कथावली

■ वर्ष : प्रथम ■ अंक : 9 ■ अप्रैल 2025

‘सफलता अपने मिशन के प्रति ईमानदार रहने में है’

कलमेश्वर ब्लॉक (नागपुर): “जिला परिषद के स्कूलों में निजी स्कूलों जैसी सुविधाएं नहीं होतीं। आवश्यक सुविधाओं के लिए सरकारी अनुमोदन समय पर नहीं आता। इसलिए, निजी स्कूलों के साथ प्रतिस्पर्धा का एकमात्र तरीका है - शिक्षा की गुणवत्ता और जिला परिषद के स्कूलों में छात्रों की संख्या बनाए रखना या बढ़ाना। लोग गुणवत्ता को समझेंगे, इस बात का विश्वास होना चाहिए।”

ये हैं डॉ. कीर्ति पालटकर, जिन्होंने विनोबा टीम से हाल ही में बातचीत की। उनका अध्यापन का सफर लगभग तीन दशक पहले एक प्राथमिक विद्यालय में शुरू हुआ था। दोहरी स्नातक, तीन स्नातकोत्तर डिग्रियों के साथ बीएड, एमएड, और उपनिषदों पर पीएचडी धारक डॉ. कीर्ति पालटकर ने दो साल के क्षेत्रीय शैक्षिक प्राधिकरण (RAA) और पाँच साल के एससीईआरटी विद्या परिषद के कार्यकाल के बाद ही कम उम्र में क्लस्टर हेड की जिम्मेदारी संभाल ली। शिक्षा के क्षेत्र में सतत व्यावसायिक विकास (CPD) का जीवंत उदाहरण मानी जाने वाली डॉ. पालटकर की यह प्रेरणादायक कहानी है। सन् 2021 में कीर्ति जी कलमेश्वर ब्लॉक के ब्राह्मणी केंद्र की केंद्र प्रमुख बनी, और पिछले साल उन्होंने सेलू क्लस्टर का कार्यभार भी संभाला। ये दो केंद्र कुल 21 जिला परिषद और 22 निजी सहायता प्राप्त व गैर-सहायता प्राप्त स्कूलों को शामिल करते हैं, जहां डॉ. पालटकर सरकारी योजनाओं का क्रियान्वयन और छात्रों के विकास के लिए पूरी निष्ठा से काम करती हैं।

“विनोबा ऐप अब तक शिक्षकों के लिए सबसे बेहतरीन मंच साबित हुआ है। अधिकांश लोग अभी भी नहीं समझते कि जिला परिषद स्कूल के शिक्षक अपने छात्रों के लिए कितना मेहनत करते हैं। विनोबा ऐप इस मेहनत को उजागर कर उन्हें प्रोत्साहित कर रहा है। सबसे खास बात यह है कि इस ऐप ने बड़े पैमाने पर ज्ञान साझा करना संभव किया है, जो मैं प्रौद्योगिकी का सबसे बड़ा लाभ मानती हूं। मेरे क्लस्टरों में प्रशासनिक कार्यों को भी इस ऐप ने सरल बना दिया है—अब यूनिफॉर्म, स्टेशनरी, और उपस्थिति का रिकॉर्ड पेपरलेस हो गया है, जो लंबे समय से मेरा प्रयास रहा है।”

कीर्ति जी अपने केंद्र में छोटे से छोटे उपक्रमों में स्वयं हिस्सा लेती हैं ताकि बाकी शिक्षक भी सक्रीय रहें।

राज्य की सबसे युवा केंद्र प्रमुखों में से एक बनने का श्रेय वह अपनी जिज्ञासा और सीखने की ललक को देती हैं। “यदि आप अपडेटेड नहीं रहते तो आप अप्रासंगिक हो जाएंगे। जो व्यक्ति अपने काम में उपयोगी है, वही समाज में भी उपयोगी बनता है।” उनका मानना है कि शिक्षकों को प्रेरित करने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी अगर केंद्र प्रमुख का दृष्टिकोण लगातार काम करने और सुधार करने का हो।

वे कहती हैं, “काम का संतोष तभी होता है जब आप सच्चाई और ईमानदारी के साथ काम करें। अगर आप कठिनाई से पीछे हटे बिना अपने मिशन पर डटे रहते हैं, तो पीछे मुड़कर देखने पर मुश्किलें बहुत छोटी नज़र आएंगी।

इस प्रक्रिया में आप बहुत कुछ सीखते हैं और प्यार व सम्मान पाते हैं। क्या यही असली सफलता नहीं है?” ■

‘अच्छे नागरिक बनें यह सबसे महत्वपूर्ण है’

शिक्षण उत्सव: जांजगीर चांपा पेज 8

स्कूल की प्रगति में समुदाय की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। जब शिक्षक यह देखते हैं कि उनके कार्यों को सराहा जा रहा है, तो साथ साथ उन्हें यह एहसास भी रहता है कि वे अभिभावकों की निगरानी में हैं और वे अधिक प्रयास करते हैं...

-धनंजय पकड़े, शिक्षक

विनोबा विशेष

समुदाय की भागीदारी पेज 4, 5 6

पड़ोसियों, यह मत पूछना, "आज स्कूल नहीं गए?"
मुझे इतनी समझ है कि अब गर्मी की छुट्टियाँ चल रही हैं

नवाचार, समावेशन और बदलाव: नासिक जिला परिषद की कहानी

नासिक: नासिक जिला परिषद की CEO आशिमा मित्तल ने हाल ही में टीम विनोबा से विस्तार से बातचीत की, जिसमें उन्होंने नासिक में अपने अब तक के कार्यकाल के दौरान सामने आई चुनौतियाँ, उनके समाधान और शिक्षकों और अधिकारियों के सहयोग से जिले में आए सकारात्मक बदलाव पर प्रकाश डाला।

जब आपने कार्यभार संभाला, तब सबसे बड़ी प्रशासनिक या प्रणालीगत चुनौतियाँ क्या थीं?

नासिक पहले से ही परफॉर्मेंस ग्रेडेड इंडेक्स (PGI) में शीर्ष जिलों में से था। लेकिन इस रैंकिंग के पीछे कई संरचनात्मक कमियाँ थीं। मैंने स्कूलों के दौरे किए तो पाया कि छात्रों को future ready skills जैसे कि कोडिंग, अंग्रेजी संचार और रोबोटिक्स का अनुभव नहीं मिल रहा था। छात्रवृत्ति और प्रतियोगी परीक्षाओं में भी भागीदारी कम थी; FLN में भी सुधार की आवश्यकता थी। शिक्षकों और क्लस्टर के कई पद खाली पड़े थे, जिससे शिक्षा का स्तर प्रभावित हो रहा था। इंफ्रास्ट्रक्चर की स्थिति भी चिंताजनक थी। कई स्कूल जीर्ण-शीर्ण इमारतों में संचालित हो रहे थे, कई जगहों पर बिजली नहीं थी, कई स्कूलों में शौचालय तक उपलब्ध नहीं थे, जिससे खासकर छात्राओं की उपस्थिति पर असर पड़ रहा था। विशेष आवश्यकता वाले बच्चों (CWSN) के लिए भी पर्याप्त सुविधाएँ नहीं थीं।

मेरा लक्ष्य था कि जिला परिषद स्कूलों को नॉलेज सेंटर के रूप में पुनः स्थापित किया जाए, जिसमें छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर इंफ्रास्ट्रक्चर, कोडिंग, रोबोटिक्स, अंग्रेज़ी भाषा और गणित जैसी प्रति-स्पर्धात्मक क्षमताओं का लाभ मिले।

समाधान लागू करने की प्रक्रिया कैसी रही?

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए मैंने बहु-आयामी दृष्टिकोण अपनाया और विभिन्न चुनौतियों का समाधान एक साथ शुरू किया।

सबसे पहले, हमने काफी समय से लंबित 700 प्राथमिक शिक्षकों की भर्ती की, 105 क्लस्टर प्रमुखों और 474 प्रधानाध्यापकों की पदोन्नति की। इससे स्कूलों में नेतृत्व मजबूत हुआ और सुधार को गति मिली। हमारे व्यापक जागरूकता अभियानों और अभ्यास सत्रों के कारण नवोदय प्रवेश परीक्षा के लिए छात्रों का पंजीकरण 2021 में 11,670 से बढ़कर 2024 में 20,016 हो गया। इसी तरह, पाँचवीं कक्षा की छात्रवृत्ति परीक्षा में बैठने वाले छात्रों की संख्या, जो 2022 में 20,921 थी, 2025 में बढ़कर 28,830 हो गई। आठवीं कक्षा के छात्रों की संख्या 2022 में 17,564 थी, जो 2025 में 24,599 हो गई।

हमारी एक बड़ी पहल रही - मॉडल स्कूल प्रोजेक्ट। पहले चरण में हमने 128 स्कूलों को चुना, जिसमें प्रत्येक स्कूल के साथ आसपास के चार अन्य स्कूलों को जोड़ा गया। दूसरे चरण में 522 और स्कूल चुने गये। कुल 650 स्कूल (जिले के 20% स्कूल) इस परियोजना का हिस्सा बन गए। हमने इस प्रोजेक्ट को सरकारी अनुदान के भरोसे न रखकर DPC, मनरेगा, CSR और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से पूरा किया।

इस दौरान स्कूलों में आवश्यक सुविधाएँ प्रदान की गईं— 178 नए कक्षाओं का निर्माण, खेल सामग्री, वर्चुअल रियलिटी सिस्टम, टैबलेट, और एक्टिविटी किट्स उपलब्ध कराई गईं। 92 स्कूलों में सौर ऊर्जा प्रणाली स्थापित की गई ताकि बिजली की निर्बाध आपूर्ति बनी रहे। इसके अलावा, शिक्षकों के लिए एक नया प्रशिक्षण मॉडल विकसित किया गया, जिसमेंचार सी (Critical Thinking, Collaboration, Communication, Creativity) पर जोर दिया गया ताकि शिक्षक इन संसाधनों का प्रभावी उपयोग कर सकें।

हमारी एक और पहल सुपर-50 थी, जिसे 2022-23 में शुरू किया गया। इसमें ग्रामीण क्षेत्रों के आर्थिक रूप से कमजोर छात्रों को निशुल्क कोचिंग, मार्गदर्शन और आवासीय सुविधाएँ प्रदान की गईं, जिससे वे JEE और CET की तैयारी कर सकें। नतीजे प्रभावशाली रहे - 22 छात्रों ने JEE मेन्स और 7 ने JEE एडवांस्ड पास किया। इसके बाद, हमने इस योजना का विस्तार करते हुए परिक्षार्थीयों की संख्या 110 कर दी और NEET के लिए भी कोचिंग शुरू की।

इसके अलावा, हमने छात्रों के अंग्रेज़ी शब्दावली और आत्मविश्वास को बेहतर बनाने के लिए 'स्पेलिंग बी' प्रतियोगिता शुरू की, जिसमें 3,265 स्कूलों के 1,06,264 छात्रों ने भाग लिया। नासिक के आठ छात्र राष्ट्रीय स्तर तक पहुंचे।

'स्पेलिंग बी' में भागीदारी के लिए जिले का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स और एशिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में दर्ज हुआ। इस सफलता के बाद हमने 'मैथ बी' प्रतियोगिता शुरू की, जिसे जबरदस्त प्रतिसाद मिली। हमने 'स्पेलिंग बी', 'मैथ बी' और 'हैकाथॉन' को ज़िला परिषद अध्यक्ष चषक (ZP वार्षिक खेल-कला उत्सव) का हिस्सा बनाया ताकि यह पहल सतत बनी रहे।

नासिक जिला परिषद की CEO

आशिमा मित्तल

विनोबा ऐप ने इस प्रक्रिया में क्या भूमिका निभाई?

विनोबा ऐप से छात्रवृत्ति परीक्षाओं के लिए प्रैक्टिस टेस्ट पेपरलेस और डेटा-ड्रिवन हो गए, जिससे त्वरित परिणाम विश्लेषण और आवश्यक सुधार संभव हुआ। 2024-25 में पाँचवीं कक्षा के 8,000 से अधिक छात्रों के लिए विनोबा टीम ने तीन प्रैक्टिस टेस्ट आयोजित किए, जिससे उन्हें काफी लाभ हुआ। इसके अलावा, 'पोस्ट ऑफ द मंथ' जैसी पहलों से विनोबा शिक्षकों के लिए प्रेरणा का मंच बना।

अब शिक्षा व्यवस्था कैसी दिखती है?

आज स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता के साथ-साथ इंफ्रास्ट्रक्चर भी बेहतर हुआ है। सुपर-50 परियोजना ने ग्रामीण छात्रों के लिए देश के शीर्ष इंजीनियरिंग संस्थानों में पहुँचने का मार्ग प्रशस्त किया है। छात्रों की प्रतियोगी परीक्षाओं में भागीदारी बढ़ी है, और स्कूलों में सुधार से हजारों बच्चों के लिए शिक्षा का माहौल बेहतर बना है।

आगे लक्ष्य क्या हैं?

मेरा लक्ष्य है कि नासिक ज़िला परिषद स्कूलों के सभी छात्रनिपुणबनें और हमारे 650 मॉडल स्कूल पूरे राज्य में उत्कृष्टता के केंद्र बनें।

पिछले कुछ वर्षों में हमने देखा कि यदि रणनीतिक योजना, सामुदायिक भागीदारी और नवाचारों को सही ढंग से लागू किया जाए, तो बड़े बदलाव संभव हैं। शिक्षा में सुधार की यह यात्रा चुनौतीपूर्ण है, लेकिन हमें इसे निरंतर आगे बढ़ाते रहना होगा—एक कदम, एक स्कूल, एक बच्चा, और बडा बदलाव।

गरियाबंद: हाल ही में आयोजित एक कार्यक्रम में POM और बोलेगा बचपन के लिए कुल 9 शिक्षकों को सम्मानित किया गया। यह सम्मान D.E.O ए. के. सारस्वत, DMC के. एस. नायक, ADSO श्याम चंद्राकर और BRCC तेजेश कुमार शर्मा के हाथों प्रदान किया गया। कार्यक्रम में टीम विनोबा की ओर से शुभम पटेल उपस्थित थे।

दंतेवाड़ा: हाल ही में आयोजित एक कार्यक्रम में POM (6 शिक्षक), बोलेगा बचपन (4 शिक्षक), उपस्थिति (6 स्कूल) और लाइब्रेरी बैग (2 शिक्षक) के लिए सम्मान प्रदान किए गए। यह पुरस्कार D.E.O एस. के. अंबस्टा और DMC हरीश गौतम के हाथों प्रदान किए गए। कार्यक्रम में टीम विनोबा की ओर से सागर गजभिये उपस्थित थे।

दुर्ग: हाल ही में आयोजित एक कार्यक्रम में POM (10 शिक्षक), बोलेगा बचपन (11 शिक्षक), उत्कृष्ट 10 वीं व 12 वीं (6 स्कूल), 5 वीं व 8 वीं (6 स्कूल) और टॉप 3 CAC (6 संकुल समन्वयक) को सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार D.E.O अरविंद मिश्रा, DMC सुरेंद्र पांडेय और सहायक निदेशक अमित घोष के हाथों प्रदान किए गए। टीम विनोबा से हेमंत साहू व प्राची तुमसरे उपस्थित थे।

भंडारा: हाल ही में आयोजित कार्यक्रम में POM (6 शिक्षक), किलबिल मुक्त मंच (6 शिक्षक), स्पोकन इंग्लिश चैलेंज (5 शिक्षक) और 6 संकुल प्रमुखों को, छात्रवृत्ति परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 5 वीं और 8 वीं कक्षा के टॉप स्कूलों को शिक्षण व क्रीड़ा सभापति श्री नरेश ईश्वर, EO श्री रविंद्र सोनटक्के, EO (Sec.) श्री रविंद्र सालामे के हाथों पुरस्कार प्रदान किए गए।

चंद्रपुर: हाल ही में आयोजित कार्यक्रम में POM (5 शिक्षक), महावाचन क्लब (5 शिक्षक), सोशल अवेयरनेस क्लब (3 शिक्षक), छात्रवृत्ति परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले 5 वीं और 8 वीं के 6 स्कूलों व 3 शीर्ष क्लस्टर प्रमुखों को भी सम्मानित किया गया। इन शिक्षकों और स्कूलों को EO अश्विनी सोनवणे व Extension Officer शुभांगी पिजदुर्कर के करकमलों से सम्मानित किया गया।

रायपुर: हाल ही में आयोजित कार्यक्रम में शिक्षकों को के लिए POM (7 शिक्षक), बोलेगा बचपन (1 शिक्षक) व JNV (6 विद्यालय) को सम्मानित किया गया। इन शिक्षकों और विद्यालयों को DEO विजय कुमार खंडेलवाल, DMC खेल चंद पटले व अशोक वर्मा के करकमलों से सम्मानित किया गया। टीम विनोबा की ओर से नीलम अहिरवार उपस्थित थी।

धाराशिव: हाल ही में आयोजित कार्यक्रम में जनवरी 2025 के लिए पोस्ट ऑफ द मंथ (POM) (5 शिक्षक) व महावाचन (2 शिक्षक) को सम्मानित किया गया। इन शिक्षकों को DEO अशोक पाटिल के करकमलों से सम्मानित किया गया। इस अवसर पर टीम विनोबा की ओर से प्रोजेक्ट ऑफिसर सोमनाथ स्वामी उपस्थित थे।

सुकमा: हाल ही में आयोजित कार्यक्रम में POM (7 शिक्षक), बोलेगा बचपन (2 शिक्षक), स्पोकन इंग्लिश (2 शिक्षक), एकेडमिक प्रोग्राम (5 स्कूल), और लीडरबोर्ड CACs (4 अधिकारी) को कलेक्टर देवेश कुमार ध्रुव, DEO G. R. मंडावी व DMC उमाशंकर तिवारी के करकमलों से सम्मानित किया गया। टीम विनोबा की ओर से सागर गजभिये उपस्थित थे।

स्टडी टाइम बनाम स्क्रीन टाईम

शिक्षकों, अभिभावकों ने पढ़ाई में बाधा बनी मोबाईल स्क्रीन का मिलकर ढूंढा हल

अंत्री देशमुख (बुलढाणा): गाँव का ज़िला परिषद स्कूल हमेशा से बच्चों को बेहतर शिक्षा देने के लिए प्रयासरत रहा है। शिक्षक दिन-रात मेहनत करते थे, लेकिन बच्चों का अधूरा गृहकार्य उनकी मेहनत पर पानी फेर देता। बार-बार समझाने और सज़ा देने के बावजूद कोई बदलाव नहीं हो रहा था। बच्चों की इस हालत को देखकर शिक्षकों का दिल दुखता था।

समस्या की जड़ थी मोबाइल और टीवी की लत। माता-पिता, जो दिनभर खेतों में मेहनत कर थक जाते थे, बच्चों को व्यस्त रखने के लिए टीवी और मोबाइल का सहारा लेते। लेकिन यह सहारा धीरे-धीरे बच्चों की पढ़ाई और ध्यान को खत्म कर रहा था। शिक्षक रामकिशन पिसे कहते हैं, “जब हमने उन्हें बताया कि बच्चों का नुकसान हो रहा है तो वे बच्चों को मोबाईल और टीवी से दूर रखने लगे, किन्तु वे खुद मोबाईल और टीवी पर लगे रहते थे। इससे बच्चों का कुछ खास फायदा नहीं होता था।”

शिक्षकों ने हार नहीं मानी। उन्होंने गांव के बुज़ुर्गों और अभिभावकों से लंबी चर्चा की और 'स्टडी टाइम' (अध्ययन समय) की योजना बनाई। तय हुआ कि सुबह 7 से 10 बजे और शाम 7 से 10 बजे तक गांव में सभी टीवी और मोबाइल बंद रहेंगे। इन घंटों में बच्चे केवल पढ़ाई करेंगे, और अभिभावक उनके साथ बैठकर पढ़ाई में उनकी मदद करेंगे।

हालाकि इस पहल को लागू करना आसान नहीं था। कुछ माता-पिता ने इसे समय की बर्बादी कहा, तो कुछ ने अपनी व्यस्तता का बहाना बनाया। लेकिन शिक्षकों ने गाँव के घर-घर जाकर माता-पिता को समझाया। उन्हें भरोसा दिलाया कि यह बदलाव बच्चों के भविष्य के लिए जरूरी है। शिक्षकों ने खुद भी इस अभियान में सक्रिय भाग लिया।

वे बच्चों के घरों में जाकर उनकी समस्याएं सुलझाते, और माता-पिता को सही मार्गदर्शन देते।

धीरे-धीरे माता-पिता और बच्चे दोनों इस पहल का हिस्सा बन गए। अभिभावकों ने टीम विनोबा को बताया, “रामकिशन जी का नुस्खा सरल था। बच्चों का गृहपाठ लेने की जरूरत नहीं है। केवल मोबाईल-टीवी बंद कर के उनके पास बैठें तो वे दुर्लक्षित महसूस नहीं करेंगे, और अपने आप पढ़ेंगे। और यह नुस्खा सचमुच कारीगर रहा।”

बच्चे भी धीरे धीरे घर और टीवी-मोबाईल से दूर कहीं पेड़ के नीचे या किसी मंदिर या हॉल में मिलकर पढ़ने लगे। इस योजना ने चमत्कार कर दिखाया था। समय पर गृहकार्य पूरा होने लगे। बच्चे पहाड़े और कविताएं याद करने में निपुण हो गए। अभिभावकों को भी उनकी पढ़ाई और बाकी गतिविधियों में रस आने लगा। उन्होंने अपने मोबाइल फोन और टीवी का समय कम कर बच्चों के साथ वक्त बिताना शुरू कर दिया। गाँव में पढ़ाई का माहौल बन गया। 'मिशन स्टडी टाइम' ने यह साबित कर दिया कि सामूहिक प्रयास से किसी भी समस्या का समाधान संभव है। यह सिर्फ एक पहल नहीं, बल्कि एक नई शुरुआत थी।

'स्टडी टाइम' पहल सामुदायिक एकता की मिसाल बन गई, जो यह साबित करती है कि मिलजुलकर किए गए प्रयास आधुनिक अनजानी चुनौतियों को भी पार कर सकते हैं। छोटे और सार्थक कदम कैसे बड़े और स्थायी बदलाव ला सकते हैं, इसका यह प्रेरणादायक उदाहरण है। यह पहल सिर्फ अंत्री देशमुख के बच्चों के जीवन को बदलने तक सीमित न रहे, बल्कि ग्रामीण स्कूलों के लिए उम्मीद की किरण बनकर फैले यह सोचकर टीम विनोबा आगे बढ़ रही है। ■

'समुदाय की भागीदारी से शिक्षकों को अपनी ज़िम्मेदारी याद रहती है'

थुगांव निपाणी (नागपूर): गाँव के एक बुजुर्ग रोज़ाना ज़िला परिषद स्कूल के परसबाग की देखभाल में लगे रहते हैं। बाग की देखभाल करना, चहारदीवारी बनाना, और बच्चों को बागवानी का महत्व सिखाना उनका नियमित काम है। उनके अथक प्रयासों की बदौलत स्कूल को जिले के सर्वश्रेष्ठ परसबाग का पुरस्कार मिला।

प्रधानाध्यापक श्री धनंजय पकड़े के नेतृत्व में सामुदायिक भागीदारी के सफल प्रयास का परिणाम है। गाँव के अन्य लोगों ने भी सिंचाई के लिए पाइप और स्प्रिंकलर और खेती के लिए अन्य सामान जुटाया। अब बच्चे ताज़ा और पौष्टिक सब्जियाँ खा रहे हैं। शिक्षक भी अपनी रोज़मर्रा की सब्जियाँ स्कूल से ही खरीदते हैं। गाँव के अन्य लोग भी स्कूल की उपज लेना पसंद करने लगे हैं। धनंजय जी कहते हैं, "स्कूल की प्रगति में समुदाय की भागीदारी अत्यंत आवश्यक है। इससे स्कूल प्रशासन बेहतर प्रदर्शन करने के लिए बाध्य हो जाता है। जब शिक्षक यह देखते हैं कि उनके कार्यों को सराहा जा रहा है, तो साथ साथ उन्हें यह एहसास भी रहता है कि वे अभिभावकों की निगरानी में हैं और वे अधिक प्रयास करते हैं। इससे पढ़ाई की गुणवत्ता अपने आप ही बेहतर होती जाती है।"

यह सामुदायिक भागीदारी बिल्कुल शून्य थी जब पकड़े जी ने 2018 में इस स्कूल में काम शुरू किया। शिक्षक पढ़ाने का काम तो कर रहे थे, लेकिन उन्हें न कोई सराहना मिल रही थी, न ही कोई मार्गदर्शन। वे भी अधिक प्रयास करने के लिए प्रेरित नहीं होते थे। इसीसे उत्पन्न हुई थी एक और समस्या: छात्रों की बहुत कम संख्या।

धनंजय जी ने समुदाय को शिक्षा से जोड़ने के लिए एक नया तरीका अपनाया। वे अभिभावकों को भंडारा जिले में खराशी की आदर्श ज़िला परिषद स्कूल दिखाने ले गए। वहाँ के लोग भावुक होकर कहते हैं, "हमें पहली बार किसी शिक्षक ने इस तरह स्कूल के दौरे के लिए आमंत्रित किया था।" इस यात्रा ने उनकी सोच बदल दी। अब वे चाहते थे कि उनके बच्चों को भी वैसा ही माहौल मिले जैसा खराशी की स्कूल में था। इसी तरह अभिभावकों ने सेवाग्राम, वर्धा, में "शिक्षणाची वारी" कार्यक्रम में भाग लिया। वहाँ के एक स्कूल को देखकर अभिभावकों पर गहरा प्रभाव पड़ा।

गाँव के लोगों का विश्वास जीतने के बाद धनंजय जी ने छात्रवृत्ति परीक्षाओं की तैयारी करवाने के लिए स्कूल के 2 घंटा पहले आकर और 2 घंटा बाद तक रुककर अभ्यास और संशोधन करने लगे। बच्चे भी उनके साथ पढ़ाई करने लगे। यह देखकर अभिभावकों ने स्कूल में लाइटिंग और अन्य सुविधाएँ उपलब्ध कराईं और एक सकारात्मक वातावरण बना।

जब धनंजय जी ने छुट्टियों के दौरान बाल संस्कार शिविर आयोजित करने का सुझाव दिया तो लोगों ने मिलकर लगभग 2.5 लाख रुपयों का चंदा इकट्ठा कर लिया और गाँववालों ने स्वयं सफाई, भोजन पकाने और वितरण में योगदान दिया।

धनंजय जी ने शिक्षा के पारंपरिक तरीकों से आगे बढ़कर कई नवाचार किए। स्कूल बैंक और स्टेशनरी स्टोर शुरू किये। जिसे पूरी तरह से छात्रों द्वारा संचालित किया जाता है। बिक्री से होने वाले मुनाफे को छात्रों में बाँटा जाता है। इसके अलावा, दिवाली में दिये और आकाश कंदील बनाकर बेचना। नियमित वाद-विवाद प्रतियोगिताएँ, प्रसिद्ध व्यक्तित्वों के साक्षात्कार, और फूड फेस्टिवल जैसी गतिविधियाँ भी शुरू की गईं। छात्र अब तकनीकी संसाधनों का उपयोग करते हुए यूट्यूब और अन्य स्रोतों से नई चीज़ें सीखने लगे हैं। धनंजय जी का मानना है कि छात्रों को केवल व्यस्त रखना पर्याप्त नहीं है, उन्हें रचनात्मक कार्यों में संलग्न करना ज़रूरी है, ताकि वे अपनी रुचियों को पहचान सकें। वे कहते हैं। "सभी छात्र पढ़ाई में अच्छे नहीं होते, लेकिन हर बच्चे में कोई न कोई प्रतिभा ज़रूर होती है। हमारा काम उन्हें सीखने के अवसर देना है। वे वही सीखेंगे जो उन्हें पसंद आएगा।"

धनंजय जी को उनके अथक कार्य के लिए कई पुरस्कार प्राप्त हुए, जिनमें से प्रमुख हैं – सेवासादन का राज्यस्तरीय रमाबाई रानडे पुरस्कार, लोकसत्ता-विदर्भ गौरव समिति का 'शिक्षक गौरव', सार्थक फाउंडेशन का 'शिक्षक गौरव', वेध प्रतिष्ठान का 'साने गुरुजी' पुरस्कार, और (स्कूल को) 'मुख्यमंत्री माझी शाला सुंदर शाला' पुरस्कार।

बातचीत समाप्त करते हुए धनंजय जी कहते हैं, "बच्चे अब पहचानने लगे हैं कि उनका समय कीमती है, और अपने उस समय का सकारात्मक उपाय कैसे करना है। अब वे कभी खाली नहीं बैठेंगे, मेहनती और आत्मनिर्भर बनेंगे और अपने भविष्य का निर्माण स्वयं करेंगे।" ■

'बच्चे गाँव का भविष्य ही नहीं, वर्तमान भी हैं'

भरुवाडीह कला (रायपुर): स्कूल की चहार दीवारी बनी हुई थी, लेकिन भीतर इमारत के इर्द गिर्द मैदान पर सिर्फ जंगली घास और ऊबड़-खाबड़ जमीन थी। सरकारी माध्यमिक विद्यालय, भरुवाडीह कला (रायपुर) के मानद प्रधानाध्यापक श्री दिनेश वर्मा 2015 में जब यहाँ आए तब यह दृश्य देखकर हैरान रह गए, "जिस स्कूल में अगली पीढ़ी का भविष्य बनेगा उसका परिसर किसी मंदिर की तरह होना चाहिए। मैंने सोच लिया कि इसकी यह अवस्था ज्यादा दिन तक नहीं रहनी चाहिए, इसे बदलना होगा।"

गाँव का माहोल भी खराब था। लोग गालियां देते थे, शराब पीते, स्कूल में गंदगी फेंक कर जाते थे। स्कूल के बच्चे भी यह सब देख और सीख रहे थे। स्कूल में केवल दो शिक्षक थे और प्रधानाध्यापक का पद खाली था। यह जिम्मेदारी भी दिनेश जी ने उठा ली। "किसी को नेतृत्व संभालना जरूरी था, क्योंकि यह स्कूल बहुत दिनों से दुर्लक्षित था।"

फिर उन्होंने सरकारी या निजी मदद का इंतजार नहीं किया। अपने खर्चे से मैदान समतल करवाया, मुरुम डलवाई और पौधे खरीदकर खुद ही लगाने लगे—बिना यह देखे कि कोई मदद करता है या नहीं।

यह सफर आसान नहीं था। शुरुआत में कुछ लोग दीवार फांदकर इसकी तोड़फोड़ कर देते थे। फिर गाँववालों की मदद से निगरानी शुरू की तब उपद्रव कम हुआ। धीरे-धीरे गाँववालों का भी लगाव बढ़ा और एक सुंदर क्यारी बनने लगी।

मैं रोज सुबह 9 बजे, स्कूल में एक घंटा पहले ही आ जाता था, यहाँ तक कि रविवार को भी, ताकि पौधों को पानी देकर उनकी देखभाल कर सकूँ। बच्चों ने यह देखा और धीरे-धीरे वे भी मेरे साथ जुड़ने लगे। कुछ समय बाद, एक शिक्षक का तबादला हो गया और मैं केवल एक सह-शिक्षक के साथ रह गया। सभी कक्षाएँ और पढ़ाई समय पर पूरी कर पाना संभव नहीं था, इसलिए मैंने स्कूल का समय बढ़ाकर शाम 5 बजे तक कर दिया। लोगों ने इस निर्णय पर प्रश्न उठाए। मैंने उन्हें समझाया कि यह सब बच्चों के समग्र विकास के लिए किया जा रहा है। धीरे-धीरे वे इस बात को समझने लगे और सहयोग देने लगे।

अब स्कूल इतना सुंदर हो गया है कि बच्चे हर दिन, यहाँ तक कि रविवार और छुट्टियों पर भी आना चाहते हैं। दिनेश जी बताते हैं, "स्कूल के सुंदर वातावरण में बिगड़े हुए बच्चे भी अपने आप अच्छा वर्तन करने लगे। धीरे धीरे हमने उन्हें अनुशासित किया, जैसे समय पर स्कूल आना, साफ सफाई, बड़ों का आदर, स्त्रियों का आदर, इत्यादि। अब बच्चे घर पर यह सब ले कर जाते हैं तो अभिभावक भी उनके सामने गाली देने से कतराते हैं।"

दिनेश जी बच्चों को सहज बातचीत के माध्यम से विश्व इतिहास की प्रेरणादायक कहानियाँ सुनाने लगे, कथाकथन, वाद-विवाद, शिल्प, बागवानी जैसी क्षमताओं को प्रोत्साहित करते रहे।

एक अभिभावक ने टीम विनोबा को बताया, "दिनेश जी ने स्वयं के कार्य से उदाहरण पेश किया है। बच्चे इससे प्रेरित होते हैं। विज्ञान, गणित, चित्रकला या खेल हो, यह बच्चों के लिए निरंतर सीखने की जगह बन गई है। स्कूल का यह वातावरण बच्चों के लिए हर तरह से पोषक है। जब भी हमारे यहाँ मेहमान आते हैं, हम उन्हें अपने गांव का स्कूल ज़रूर दिखाते हैं। हमें इस पर गर्व होता है।" अब होली-दिवाली भी स्कूल में ही होती है। बच्चे हर दिन, हर त्योहार पर स्कूल में ही होते हैं, जिससे गाँववालों की भावनाएं भी स्कूल से जुड़ गई हैं।

अब गाँववाले खुद ही स्कूल परिसर की सुरक्षा का ध्यान रखते हैं, और दिनेश जी अपने अगले लक्ष्य को प्राप्त करने में जुट गए हैं, जो है --अपने छात्रों की अंग्रेज़ी सुधारना; अधिक शिक्षकों की व्यवस्था करना, ताकि शैक्षिक परिणाम और भी बेहतर हो सकें और सीखने की गुणवत्ता भी बढ़े; छात्रों को स्कॉलरशिप परीक्षाओं में शामिल होने के लिए तैयार करना।

दिनेश जी ने पिछले दस साल से इस काम में अविश्वसनीय मात्रा में आर्थिक योगदान दिया है। और वे अभी रुके नहीं हैं। वे कहते हैं, "यह रास्ता बहुत लंबा और कठिन है। लेकिन यह काम मैं अब अधूरा नहीं छोड़ सकता। जीतने श्रम और धन की ज़रूरत होगी, मैं देता रहूँगा। मुझे इसे अंत तक ले जाना है।" ■

शैक्षिक क्रांति की दिशा में...

एक शिक्षक की कहानी, उन्हीं की जुबानी

भोथली (धमतरी): श्री एन. के. साहू के लिए शिक्षक और सहायक कार्यक्रम समन्वयक (एपीसी) की दोहरी भूमिका निभाना आसान नहीं था। उनपर चार ब्लॉकों में फैले 168 क्लस्टर्स, 877 प्राथमिक स्कूलों और 447 उच्च प्राथमिक स्कूलों के मूल्यांकन की ज़िम्मेदारी होती थी, जो हर दिन उनके धैर्य और क्षमताओं की परीक्षा लेती थी।

"हर स्कूल का अपना अलग शेड्यूल होता था," वे बताते हैं। "मुझे अलग-अलग दिनों पर आयोजित परीक्षाओं के आंकड़ों को इकट्ठा करना पड़ता था। कुछ स्कूल तो परीक्षाएं करवाना टाल देते थे।" महीने का अधिकांश हिस्सा डेटा इकट्ठा करने, गलतियों को सुधारने और उनका विश्लेषण करने में ही बीत जाता था। यह प्रक्रिया कठिन थी, जो उनका उत्साह कम कर देती थी।

ऐसे में विनोबा ऐप उनकी जिंदगी में आया — और सबकुछ बदल गया।"विनोबा ऐप मेरे लिए किसी वरदान से कम नहीं है," वे कहते हैं। इस ऐप ने सभी जांच प्रक्रियाओं को आसान बना दिया। पहले प्रश्नपत्रिकाएँ ब्लॉक स्तर पर तयार होती थी। विनोबा ऐप द्वारा एक ही प्रश्नपत्रिका एक साथ जिले के सारे स्कूलों में प्रसारित हो सकती थी। शिक्षकों का वह काम कम हो गया, तो सारे संकुलों में एक ही दिन परीक्षाएं आयोजित करना संभव हो गया। "इससे ये भी देखना आसान हो जाता है कि हर स्कूल इसमें हिस्सा ले रही है, क्यूंकि ऐप के द्वारा हम सारे जिले के स्कूलों तक पहुँच पा रहे हैं।"

विनोबा ऐप का मॉनिटरिंग डैशबोर्ड समन्वयकों के लिए एक सशक्त साधन बन गया। साहू जी कहते हैं, "यह हमें क्लस्टर, ब्लॉक और जिला स्तर पर स्कूलों की प्रगति पर नज़र रखने में मदद करता है। हम देख सकते हैं कि कौन से स्कूल बेहतर परिणाम ला रहे हैं और कहाँ अधिक सहयोग की जरूरत है।"

पहले ये सारा काम करने में हफ्तों लग जाते थे, वह कुछ ही दिनों में पूरा होने लगा। "विनोबा की मदद से केवल तीन दिनों में परीक्षा के परिणाम का डेटा तैयार हो गया। मेरे लिए यह चमत्कार था। पहले जिस काम में हफ्तों लगते थे, अब वह एक हफ्ते में पूरा हो जाता है—वो भी कम से कम गलतियों के साथ।"

शिक्षकों के लिए भी विनोबा ऐप ने बड़ा बदलाव लाया। "डेटा एंट्री के प्री-फिल्ड टेम्पलेट्स और तुरंत अपलोड की सुविधा ने हमारा काम बेहद आसान कर दिया," वे बताते हैं। शिक्षकों का काफी समय बचने लगा। "अब हम बच्चों की पढ़ाई और उन्हें नई-नई चीजें सिखाने पर ध्यान दे सकते हैं।"

अपनी कहानी सुनाते हुए साहू जी के चेहरे पर संतोष साफ झलकता है। "विनोबा सिर्फ एक ऐप नहीं है—यह शिक्षा क्षेत्र में बदलाव लेकर आया है। यह हमारे काम को आसान बनाकर हमारे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण और समान शिक्षा देने में सहायक होगा।" आजकल साहू जी अपने हर साथी शिक्षक को यह सवाल ज़रूर पूछते हैं, "क्या आप विनोबा पर हैं? अगर नहीं, तो आप शिक्षा में हो रहे इस अद्भुत बदलाव का हिस्सा बनने से चूक रहे हैं।"

साहुजी की यह बात विनोबा शिक्षक सहायक कार्यक्रम का लक्ष्य सार्थक करती है। उनका यह वचन इस कार्यक्रम को सारांशित करता हैं, "विनोबा से पहले मैं अकेले एक ज़िला परिषद स्कूल के बच्चों की ज़िंदगी संवारने की कोशिश कर रहा था। लेकिन अब मैं पूरे देश के विशाल शिक्षक समुदाय का हिस्सा बन गया हूँ। पहले मैं सिर्फ़ एक बूंद था, अब मैं समंदर बन गया हूँ।" ■

कविता

विनोबा ॲप

बालकांचा विकास करणे
हा एकच ध्यास धरु या
गुणवत्तेत निपून होण्यास
विनोबासोबत काम करु या ||ध्रु ||

शिक्षण होणार आनंददायी
भीती राहणार नाही काही
गणित इंग्रजी सोपे करू या
बालकांचा विकास करणे
हा एकच ध्यास धरु या || 1 ||

गोष्टी कविता आणि कहाणी
आवडतील करायला गाणी
कोऱ्या चित्रात रंग भरू या
बालकांचा विकास करणे
हा एकच ध्यास धरु या || 2 ||

विनोबाची किमया सारी
उपक्रम करु लागले भारी
विनोबा ॲप वापरू या
बालकांचा विकास करणे
हा एकच ध्यास धरु या || 3 ||

जितेंद्र रायपुरे
जि. प. उच्च प्राथमिक शाळा
कारवाफा, ता. धानोरा,
जि. गडचिरोली

कूट प्रश्न 9 का उत्तर

5 बाघ, 10 बंदर, 8 हाथी (कुल = 23)

‘बच्चे अच्छे नागरिक बनें यह सबसे महत्वपूर्ण है’

जांजगीर चांपा: “शिक्षकों को यह लक्ष्य ज़रूर रखना चाहिए कि उनके छात्र हर क्षेत्र में सफल हों, चाहे वह जवाहर नवोदय परीक्षा, NMMSE, JEE या NEET हो। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण यह है कि वे अच्छे नागरिक बनें।”

जांजगीर चांपा में 27 फरवरी को आयोजित पहले 'विनोबा शिक्षण उत्सव' में कलेक्टर श्री आकाश छिकारा के यह प्रेरक शब्द हैं।

'विनोबा शिक्षण उत्सव', जो जिला शिक्षा विभाग, ओपन लिंक्स फाउंडेशन (O L F) और HSBC – जो जिले में OLF के कार्य को आर्थिक सहायता भी प्रदान करता है – के संयुक्त प्रयासों से आयोजित किया। यह उत्सव शिक्षकों की अथक मेहनत को सराहने और उन्हें सम्मानित करने के साथ-साथ शिक्षकों और प्रशासकों के बीच सार्थक संवाद को बढ़ावा देने के लिए आयोजित किया गया था।

श्री छिकारा ने आगे कहा की लगभग 70% बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ रहे हैं, और स्कूल का दायित्व है कि वे उन्हें विभिन्न गतिविधियों का अनुभव कराएं। इस अवसर पर श्री छिकारा के अलावा सहायक कलेक्टर श्री दुर्गाप्रसाद अधिकारी और OLF के संस्थापक और सीईओ श्री संजय डालमिया की उपस्थिति ने कार्यक्रम को और भी गरिमामय बनाया। जिले के सीमा टोप्पो, राजेश्वर कुमार, हर प्रसाद कुर्रे, धीरज कुमार तंबोली, हरनारायण कुर्रे इन 5 शिक्षकों को 'ऐक्टिव टीचर अवॉर्ड' दिया गया। साथ ही 6 स्कूलों को पुरस्कृत किया गया, जिनमें थे रिसदा (एफएलएन), रसेडा (जेएनवी), रसौता और सिर्री (एनएमएमएस), खोरसी (उत्कृष्ट जांजगीर कक्षा 10), हरदी (जर्वे) (उत्कृष्ट जांजगीर कक्षा 12), अकलतरा (दैनिक उपस्थिति)। इसी तरह 3 सर्वश्रेष्ठ क्लस्टर - जर्वे(बी), पड़रिया,नवागढ़ – और सर्वश्रेष्ठ ब्लॉक अकलतरा पुरस्कृत किए गए।

श्री अधिकारी ने इस अवसर पर कहा कि शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण आधार शिक्षक हैं, जिन पर भविष्य का भारत टिका है। उन्होंने कहा, “यदि हमें भारत को सशक्त बनाना है, तो आवश्यक है कि शिक्षक बच्चों को सही दिशा दें। हमें केवल शैक्षिक नहीं, बल्कि उनका सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करना है।” श्री डालमिया ने कहा कि सरकारी स्कुल हमारे देश की शान है जो हर गाँव और शहर में है। साक्षरता और सर्वांगीण शिक्षा के क्षेत्र में हम थोड़े पिछड़े हुए हैं, और इनमे सुधार केवल हमारे स्कूलों के द्वारा ही हो सकता है। क्योंकि प्रेरित शिक्षक ही हमारे सरकारी स्कूलों को बहुत आगे तक लेकर जा सकते हैं।

इस उत्सव में छत्तीसगढ़ के चार जिलों से आए 125 शिक्षाविदों और प्रशासनिक अधिकारियों के साथ-साथ प्रसिद्ध शिक्षाशास्त्रियों और तकनीकी विशेषज्ञों ने भाग लिया। शिक्षकों द्वारा प्रस्तुत मनमोहक सांस्कृतिक कार्यक्रम, सरकारी स्कूली शिक्षा में महत्वपूर्ण विषयों पर विचारोत्तेजक समूह चर्चाएँ और शिक्षण और सीखने में नवाचारों पर विचारों का जीवंत आदान-प्रदान हुआ।

O L F अपने आचार्य विनोबा भावे शिक्षक सहायक कार्यक्रम के माध्यम से, शिक्षकों को सहयोग और प्रोत्साहन देकर परिवर्तनकारी शिक्षा के लिए समर्पित शिक्षकों का एक प्रेरित समुदाय बनाने का कार्य कर रहा है।

'विनोबा शिक्षण उत्सव' ने यह साबित कर दिया कि शिक्षक, प्रशासन और प्रौद्योगिकी का सहयोग शिक्षा में सार्थक परिवर्तन ला सकता है। ■

(बाईं ओर से)

1. **कलेक्टर श्री. आकाश छिकारा**
2. **सहायक कलेक्टर श्री दुर्गाप्रसाद अधिकारी**
3. **OLF संस्थापक श्री संजय डालमिया**

कूट प्रश्न 9

एक चिड़ियाघर में तीन प्रकार के जानवर हैं:
हाथी, बाघ और बंदर।
बंदरों की संख्या बाघों से दोगुनी है।
हाथियों की संख्या बाघों से तीन अधिक है।
कुल जानवरों की संख्या 23 है।
तो बताइए, चिड़ियाघर में कितने हाथी, बाघ और बंदर हैं?

OLF का हाई-टेक विनोबा कार्यक्रम सरकारी स्कूलों में शिक्षा का स्तर बढ़ाने के लिए, जिला प्रशासन के साथ मिलकर शिक्षकों की सहायता करता है, उन्हें पुरस्कृत और प्रोत्साहित करता है। साथ ही अभिनव उपक्रमों को लागू करने की क्षमता बढ़ाने पर काम करता है।

ओपन लिंक्स फाउंडेशन बंगलो नं. 3, तात्या टोपे सोसायटी, शिवरकर गार्डन के सामने, पुणे-411040
संस्थापक: **संजय डालमिया** ■ सह संस्थापक: **रीना डालमिया**
संपादक: **अमोल मावकर**